

धीर-गम्भीर, अति मर्यादित, कुलदीपक, आर्यावर्त की शान, देवभूमि के अति विशिष्ट देवता, शिव धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाने वाले, विदेही अवस्था के साथ जुड़कर परमात्म प्रणय को अभिन्न अंग बनाने वाले का अगर जन्म होगा तो विशेष ही होगा।



भी हैं तो उसको अपनी समझ के अनुसार प्रयोग में लाते हैं। कहते हैं, राम थे बहुत अच्छे लेकिन सीता को बाहर निकाल दिया। अब इसका क्या गलत इस्तेमाल होने लगा कि जब राम जैसा महान व्यक्तित्व श्री सीता को बाहर निकाल सकता है तो तुम क्या चीज हो। और उसमें एक चीज और टिप्पणी में आती है कि एक साधारण धोबी के कहने से राम के अंदर शंकालु प्रवृत्ति कैसे प्रकट हो सकती है! वो तो अति समझदार और सयाने थे। क्या लेखक द्वारा चरित्र का ऐसा वर्णन

पर भी उनका भाव और सम्मान कम न होना, उनको दोष न देकर अपने कर्म की भावी मानना और बड़ों की आज्ञा को सर्वोपरी रखना, यही तो जीवन चरित्र है। दिखाया गया है कि रावण दुश्मन है, फिर भी दस सिर वाले रावण अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, निंदा, घृणा, आलस्य और भय के बीच में रहते हुए उन्होंने इसको जीता। और उसके राज्य में रहने वाले जो परमात्मा को अपना मानते थे उनको राज्य भाग्य भी दिया।

# रामन करने वाले 'राम' बनो

सुनकर हम सब भी तो उसी बहाव में बहे नहीं जा रहे! अगर इसे हम अपने जीवन के साथ जोड़कर देखें तो किसी और के कहने से क्या हम सबको बाहर निकाल देते हैं! हम भी तो देखते-परखते हैं कि बात क्या है। ऐसे थोड़े ही हम किसी को बाहर निकाल देंगे और जो धारावाहिक बना उसमें भी राम को उलझन में दिखाया गया कि जनता ऐसे कैसे बोल सकती है श्री सीता के लिए! तो रामचंद्रजी ने ऐसा कुछ भी नहीं किया। ये आज हम एक मानसिक कल्पना के आधार से इस कर्म को कर रहे हैं, लेकिन इसके पीछे हमारा स्वार्थ है, किंतु दोष हम मढ़ दे रहे हैं श्री राम पर।

तो हम सब आत्माओं की मानसिक दशा का वर्णन है, श्री राम का चरित्र। हम रह वैसे लंका जैसी नगरी में ही तो हैं जहाँ चारों तरफ विकारों का बोलबाला है। ऐसे विकारों के साम्राज्य में अगर हम परमात्मा राम के साथ रहना शुरू कर दें और श्री राम जैसा चरित्र भी साथ-साथ निभायें तो कुछ दिन में ही दशहरा यानी दस विकारों को हरा करके अपनी विजय पताका हम भी फहरा सकेंगे।

तो 'राम' आत्मा राम की कहानी है, जो है तो इस दुनिया में ही लेकिन सबके बीच में रहते हुए, सबको समाते हुए, सबको स्वीकार करना और उनके साथ चलना, यही आत्मा राम का जीवन चरित्र है जिसे चरितार्थ किया तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस में। तो मैं क्यों न श्रीराम के चरित्र को मानसिक रूप से अपने अंदर उतारकर, विकारों को जीत कर नई दुनिया में जाने के लायक खुद को बनाऊँ। तो ऐसा करने पर रामनवमी पर राम के जन्म के साथ हम आत्मा राम का भी नया जन्म हो जायेगा।

विश्व में दो विशिष्ट देवता प्रचलित हैं, एक श्रीकृष्ण, दूसरे श्रीराम। कृष्ण के साथ जुड़ी है कृष्ण जन्माष्टमी और श्रीराम के साथ जुड़ी है रामनवमी। भक्ति मार्ग में श्री रामचंद्र जी को चौदह कला सम्पूर्ण दिखाते हैं और उनके हाथ में धनुष और तर्कश में तीर दिखाते हैं। कृष्ण को चंचलता के साथ जोड़ा जाता है अर्थात् जो कलात्मक ढंग से हर

कर्म को करे और सबका मन मोह ले। और जिसको मोह भी न हो। तभी तो नाम मोहन पड़ा। ठीक उसी प्रकार श्री रामचंद्र को जीवन चरित्र के साथ जोड़ा गया, जीवन दर्शन के साथ जोड़ा गया। जो जीवन में है लेकिन जीवन को मर्यादित कैसे जीया जाये उसका सम्पूर्ण व्यक्तित्व प्रत्यक्ष रूप से श्रीराम में नजर आता है। राम जीवन है

अर्थात् जो निरंतर एक भी धारणा और मर्यादा को ना तोड़ सभी के साथ तोड़(सम्बंध) निभाता है।

इस दुनिया में विकारग्रस्त मनुष्य अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के वश जो भी मनुष्य हैं उनके कर्म में न कहीं मर्यादा है और न ही कोई धारणा है। अगर राम के चरित्र को लिखित रूप में कहीं पढ़ते



**बहादुरगढ़ से-2-हरियाणा।** राक्षाबंधन के अवसर पर सेवाकेन्द्र में आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. विनीता बहन, ब्र.कु. रेनु बहन, ब्र.कु. अंजली बहन, ब्र.कु. रुबी बहन, ब्र.कु. कोमल बहन, ब्र.कु. इंदु बहन, ब्र.कु. संदीप भाई सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे। इस मौके पर 101 फूल की लम्बी राखी बनाकर सभी ने आध्यात्मिक संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प लिया।



**डीडवाना-कुचामन(राज.)।** जिला कलेक्टर सीताराम जाट को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अनिता बहन व ब्र.कु. वसु बहन।



**कोटा-वल्लभनगर(राज.)।** दैनिक भास्कर के प्रमुख संपादक सर्वेश जी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. ज्योति बहन।



**भुसावर-भरतपुर(राज.)।** प्रसिद्ध कथा वाचिका देवी चित्र लेखा जी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. गीता बहन। साथ हैं ब्र.कु. संस्कृति बहन।



**भादरा-राज।** न्यायाधीश आरएचजेएस अनिल लोहिया को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. चंद्रकांता बहन।



**चरखी दादरी-हरियाणा।** अति. उपायुक्त डॉ. जयेंद्र सिंह, सीईओ प्रदीप कौशिक तथा एसडीएम नवीन कुमार को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. प्रेमलता बहन तथा अन्य।